वेदों में विज्ञान-५

आचार्य डॉ. उमेश यादव

अग्नि, होम-द्रव्य और अग्नि-होत्र-विज्ञान

यह तो निश्चित है कि होम द्रव्य अग्नि में पड़ने के बाद सूक्ष्मरुप होकर वायु-मंडल को शुद्ध करते हैं । यह विज्ञानसम्मत है कि जो पदार्थ जितना सूक्ष्म होता है उसकी शक्ति /पोटेंसी उतनी ही बढ़ जाती है । आप समझ सकते हैं-होमियोपथी और वायोकेमिक दवाइयाँ इसी आधार पर काम करती हैं । विज्ञान मानता है कि कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता बल्कि उसका केवल रुप बदल जाता है जिसका क्रम ठोस-द्रव्य-गैस या स्थूल-सूक्ष्म-गैस रुप होता है । अग्निहोत्र में डाला गया हव्य-पदार्थ जलता हुआ हल्का होकर वायु के साथ मिल जाता है और सर्वत्र फैलता हुआ वायुमंडल को सुगन्धित कर देता है । जहाँ तक सुगन्धित हवा पहुँचती है, वहाँ तक दूषित वायु को शुद्ध करके पर्यावरण वा वायुमंडल के प्रदूषण को दूर करती है । अल्प मात्रा में डाले हुये घी, शक्कर, केसर-कस्तूरी, अगर-तगर, गुगल आदि सब औषधीय पदार्थों से लाखों लोगों को लाभ पहुँचता है ।

अग्निहोत्र के लाभ

संक्षिप्त रुप से अग्निहोत्र के लाभों को केन्द्रित करने की कोशिश की जा रही है । आप इस पर चिन्तन कर नीर-क्षीर विवेक कर सकते हैं और वैदिक विज्ञान को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं ।

१. प्रकृति के संतुलन को बनाने में सहायक- स्वच्छ व स्वस्थ प्राणवायु के निर्माण में अग्निहोत्र अत्यन्त सहायक है । इसके प्रयोग से प्रदूषण निश्चित रुप से कम हो

जाता है और वह स्थान रहने योग्य बन जाता है । इससे प्राकृतिक वातावरण संतुलित होने लगता है ।

२. कई प्रकार के मानसिक व बौद्धिक रोगों का निवारण स्वत: होने लगता है । पर्यावरण में फैले प्रदूषण से शारीरिक हानि तो होती ही है, मानसिक व बौद्धिक हानि भी होती है । मानसिक अपराध, दुर्बलता, कुविचार, दुर्व्यसन, आत्महत्या, मानसिक तनाव आदि तमाम कुत्सित कार्य करने की प्रवृत्तियाँ पनपने लगती हैं । अग्निहोत्र-विधि से ऐसे अध्यात्म का विकास होता है कि व्यक्ति इन दूषित प्रवृत्तियों से छूटकारा पा लेता है क्योंकि यहाँ शिवसंकल्प, सद्भाव, शांति व प्रसन्नता मय वातावरण उपस्थित होता है जिससे आत्मशक्ति व ईच्छाशक्ति का साकारात्मक विकास होने लगता है और व्यक्ति इन्हीं सब उत्तम संस्कारों के कारण कुत्सित कार्यों से बच जाता है ।

वैज्ञानिक कारण व प्रमाण

१. विविध वैज्ञानिक अनुसंधानों से सिद्ध हो चुका है कि अग्निहोत्र में प्रयुत होने वाले पदार्थों के जलने से एथिलेन आक्साइड, प्रोपिलेन, एसिटिलेन आदि कुछ ऐसे गैस बनती हैं जो वातावरण को स्वच्छ व

स्वस्थ कर देती हैं । एक जर्मन वैज्ञानिक का कथन है-“ मैंने अग्निहोत्र का खुद परीक्षण करके देखा है और पाया है कि भारतीयों के हाथ में यह एक आश्चर्यजनक हथियार है जिसका प्रदूषण-निवारण के लिये प्रयोग किया जाना उपयुक्त है ।

२. न्यू जर्सी अमेरिका में अग्निहोत्र नामक एक संस्था है जिसने इसके कई परीक्षण हो चुके हैं जिससे वहाँ की जनता पर इसका अक्षुण प्रभाव आज भी देखा जा सकता है । वैदिक विद्वान स्व. डॉ. कपिलदेव दिवेदी ने अपनी पुस्तक में इसकी चर्चा की है कि वे स्वयं एक परीक्षण में शामिल थे ।

३. इल्लाहावाद विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध रसायन-शास्त्री डॉ. स्व. स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक वैज्ञानिक कहे जाते थे । उन्होंने “अग्निहोत्र” नामक पुस्तक लिखी है । वहाँ प्रयुक्त सामग्री का विश्लेषण करते हुये खोज की है कि अग्निहोत्र में डाली हुयी सामग्री के जलने से कुछ महत्त्वपूर्ण गैसों के साथ एक फौर्मेल्डीहाइड नामक गैस बनती है जो सीधा वायुमंडल में फैल जाती है और पर्यावरण को शुद्ध करती है । यह उत्पन्न कुछ कार्बन डायक्सायड को भी शोध करके अपने में मिला लेती है अर्थात् सी ओ टु भी कुछ हद तक फोर्मेल्डीहाइड में परिवर्तित हो जाता है । यह गैस पानी के वाष्प के साथ मिलकर रोगजन्य किटाणुओं को मार देता है । इसी कारण अग्निहोत्र में जल स्थापन व जलसेंचन की व्यवस्था है । पृष्ट १५३ अग्निहोत्र-स्वामी सत्यप्रकाश पढ़ें ।

४. अग्निहोत्र में सस्वर मंत्र-पाठ भी बाहियात ध्वनि-प्रदूषण को स्वस्थ करता है । मंत्रगत सुगठित स्वर, मात्रा, शब्द आदि ये सब श्रवण-मधुरता उत्पन्न करते हैं । मन को प्रसन्न व स्वस्थ करने में ऋषियों की यह प्रक्रिया अत्यन्त सहायक है ।

५. फ्रांस के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ट्रिलबर्ट ने इसका परीक्षण करके विवरण दिया कि हवन सामग्री में प्रयुक्त शक्कर आदि मिष्ट आदि पदार्थों में वायु को शुद्ध करने की असाधरण शक्ति है । इसका धुआँ भी क्षय/टी.बी., चेचक/चीकन पोक्स, हैजा/कौलरा आदि के किटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता है ।

६. फ्रांस के ही एक अन्य वैज्ञानिक डॉ. हैफकिन ने कहा कि अग्निहोत्र में डले घी के जलने से अनेक रोगाणु नष्ट हो जाते हैं । चर्म रोग के निवारण में भी सहायक है । त्वचा में चिकनाई आती है अर्थात् खुश्की मिट जाती है ।

७. भारतवर्ष के प्रसिद्ध वैदिक विश्वविद्यालय गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार में भी सारा दस्तावेज प्राप्त है जो वहाँ की यज्ञशाला में किये वैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर है जो इससे पर्यावरण की शुद्धि का प्रमाण है ।

८. भोपाल गैस कांड एक प्रसिद्ध घटना है । परीक्षण के आधार पर यह उल्लेख मिलता है कि जिन परिवारों में नियमित अग्निहोत्र होता था/है, उन परिवारों में गैस का दुष्प्रभाव कम पाया गया ।

९. पंजाब विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के प्रोफेसर मान्य डॉ. रामप्रकाश ने अपनी पुस्तक "हवन यज्ञ-प्रदीपिका" पृष्ट ६७-में फ्रेंच विद्वान डॉ. डेमोसी की पुस्तक ' हिन्दु मैसेज ', मद्रास के एक सेनेटरी -कमिस्नर डॉ. कर्नल किंग, विष्णुदत्त शर्मा, पाश्चात्य वैज्ञानिक विद्वान हाले, पामर, बुंगे आदि अनेक शोधकर्त्ताओं का उल्लेख किया कि सबने यज्ञात्मक अग्निहोत्र से पर्यावरण की शुद्धि की साकारात्मक पुष्टि की है । यह पुस्तक पृ. ५२-६७ विशेष रुप से पढ़ने योग्य है ।

१०. वेद व वैदिक समस्त आर्ष ग्रन्थ भी विज्ञानमूलक मान्य हैं । उदाहरण के लिये ये प्रमाण द्रष्टव्य हैं । १. सिधुभ्य: कर्त्वं हवि:- अथर्ववेद- १.४.३, २. सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवत् जुहोत-ऋग्वेद ७.४७.३ , भैषज्ययज्ञा वा एते यत् चातुर्मास्यानि, तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते । ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते । -गोपथ ब्रा. उत्तर. १.१९ । कौषी. ५.१

उपर्युक्त इन तमाम प्रमाणों के आधारों पर यह सिद्ध है कि अग्निहोत्र एक वैज्ञानिक आध्यात्मिक विधि है जिससे वायु-प्रदूषण दूर होता है जिससे वातावरण स्वच्छ व स्वस्थ हो जाता है । उपर्युक्त वैदिक प्रमाणों में अग्निहोत्र से चिकित्सा का उल्लेख मिलता है ।